सफलता में ही नहीं असफलता में भी जीना.....

एक लड़का था। बहुत ब्रिलियंट था. सारी जिंदगी फर्स्ट आया. साइंस में हमेशा 100% स्कोर किया। अब ऐसे लड़के आम तौर पर इंजिनियर बनने चले जाते हैं, सो उसका भी सिलेक्शन हो गया IIT चेन्नई में। वहां से B Tech किया और वहां से आगे पढने अमेरिका चला गया। वहां से आगे की पढ़ाई पूरी की. M.Tech वगैरा कुछ किया होगा फिर उसने यूनिवर्सिटी ऑफ़ केलिफ़ोर्निआ से MBA किया।

अब इतना पढने के बाद तो वहां अच्छी नौकरी मिल ही जाती है। सुनते हैं कि वहां भी हमेशा टॉप ही किया. वहीं नौकरी करने लगा। बताया जाता है कि 5 बेडरूम का घर था उसके पास। शादी यहाँ चेन्नई की ही एक बेहद खूबसूरत लड़की से हुई थी। बताते हैं कि ससुर साहब भी कोई बड़े आदमी ही थे, कई किलो सोना दिया उन्होंने अपनी लड़की को दहेज़ में।

अब हमारे यहाँ आजकल के हिन्दुस्तान में इस से आदर्श जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। एक आदमी और क्या मांग सकता है अपने जीवन में? पढ़ लिख के इंजिनियर बन गए, अमेरिका में सेटल हो गए, मोटी तनख्वाह की नौकरी, बीवी बच्चे, सुख ही सुख, इसके बाद हीरो हेरोइने सुखपूर्वक वहां की साफ़ सुथरी सड़कों पर भ्रष्टाचार मुक्त माहौल में सुखपूर्वक विचरने लगे, The End।

अब एक दोस्त हैं हमारे, भाई नीरज जाट जी। एक नंबर के घुमक्कड़ हैं, घर कम रहते हैं सफ़र में ज्यादा रहते हैं। ऐसी ऐसी जगह घूमने चल पड़ते हैं पैदल ही, 4 -6 दिन पहाड़ों पर घूमना, trekking करना उनके लिए आम बात है। ऐसे ऐसे दुर्गम स्थानों पर जाते है, फिर आ के किस्से सुनाते हैं, ब्लॉग लिखते हैं। उनका ब्लॉग पढ़ के मुझे थकावट हो जाती है, न रहने का ठिकाना न खाने का ठिकाना (सफ़र में), फिर भी कोई टेंशन नहीं, चल पड़े घूमने, बैग कंधे पर लाद के। मेरी बीवी कहती है अक्सर, कि एक तो तुम पहले ही आवारा थे ऊपर से ऐसे दोस्त पाल लिए, नीरज जाट जैसे, जो न खुद घर रहता है, न दूसरों को रहने देता है, बहला फुसला के ले जाता है अपने साथ। पर मुझे उनकी घुमक्कड़ी देख सुन के रश्क होता है, कितना रफ एंड टफ है यार ये आदमी, कितना जीवट है इसमें, बड़ी सख्त जान है।

आइये अब जरा कहानी के पहले पात्र पर दुबारा आ जाते हैं। तो आप उस इंजिनियर लड़के का क्या फ्यूचर देखते हैं लाइफ में? सब बढ़िया ही दीखता है? पर नहीं, आज से तीन साल पहले उसने वहीं अमेरिका में, सपरिवार आत्महत्या कर ली। अपनी पत्नी और बच्चों को गोली मार कर खुद को भी गोली मार ली। What went wrong? आखिर ऐसा क्या हुआ, गड़बड़ कहाँ हुई।

ये कदम उठाने से पहले उसने बाकायदा अपनी wife discuss किया, फिर एक लम्बा suicide नोट लिखा और उसमें बाकायदा justify किया अपने इस कदम को और यहाँ तक लिखा कि यही सबसे श्रेष्ठ रास्ता था इन परिस्थितयों में. उनके इस केस को और उस suicide नोट को California Institute of Clinical Psychology ने study किया है. What went wrong?

हुआ यूँ था कि अमेरिका की आर्थिक मंदी में उसकी नौकरी चली गयी। बहुत दिन खाली बैठे रहे। नौकरियां ढूंढते रहे। फिर अपनी तनख्वाह कम करते गए और फिर भी जब नौकरी न मिली, मकान की किश्त जब टूट गयी, तो सड़क पे आने की नौबत आ गयी। कुछ दिन किसी पेट्रोल पम्प पे तेल भरा बताते हैं। साल भर ये सब बर्दाश्त किया और फिर अंत में खुदकुशी कर ली... खुशी खुशी और उसकी बीवी भी इसके लिए राज़ी हो गयी, खुशी खुशी। जी हाँ लिखा है उन्होंने कि हम सब लोग बहुत खुश हैं, कि अब सब कुछ ठीक हो जायेगा, सब कष्ट खतम हो जायेंगे।

.इस case study को ऐसे conclude किया है experts ने = This man was programmed for success but he was not trained, how to handle failure. यह व्यक्ति सफलता के लिए तो तैयार था, पर इसे जीवन में ये नहीं सिखाया गया कि असफलता का सामना कैसे किया जाए।

.आइये ज़रा उसके जीवन पर शुरू से नज़र डालते हैं। बहुत तेज़ था पढने में, हमेशा फर्स्ट ही आया. ऐसे बहुत से Parents को मैं जानता हूँ जो यही चाहते हैं कि बस उनका बच्चा हमेशा फर्स्ट ही आये, कोई गलती न हो उस से। गलती करना तो यूँ मानो कोई बहुत बड़ा पाप कर दिया और इसके लिए वो सब कुछ करते हैं, हमेशा फर्स्ट आने के लिए। फिर ऐसे बच्चे चूंकि पढ़ाकू कुछ ज्यादा होते हैं सो खेल कूद, घूमना फिरना, लड़ाई झगडा, मार पीट, ऐसे पंगों का मौका कम मिलता है बेचारों को,12th कर के निकले तो इंजीनियरिंग कॉलेज का बोझ लद गया बेचारे पर, वहां से निकले तो MBA और अभी पढ़ ही रहे थे की मोटी तनख्वाह की नौकरी। अब मोटी तनख्वाह तो बड़ी जिम्मेवारी, यानी बड़े बड़े targets.

.कमबख्त ये दुनिया साली, बड़ी कठोर है और ये ज़िंदगी, अलग से इम्तहान लेती है। आपकी कॉलेज की डिग्री और मार्कशीट से कोई मतलब नहीं उसे। वहां कितने नंबर लिए कोई फर्क नहीं पड़ता। ये ज़िंदगी अपना अलग question paper सेट करती है। और सवाल साले,सब out ऑफ़ syllabus होते हैं, टेढ़े मेढ़े, ऊट पटाँग और रोज़ इम्तहान लेती है. कोई डेट sheet नहीं।

.एक बार एक बहुत बड़े स्कूल में हम लोग summer camp ले रहे थे दिल्ली में. Mercedeze और BMW में आते थे बच्चे वहां। तभी एक लड़की, रही होगी यही कोई 7-8 साल की, अचानक जोर जोर से रोने लगी। हम लोग दौड़े, क्या हुआ भैया, देखा तो वो लड़की गिर गयी थी। वहां ज़मीन कुछ गीली थी सो उसके हाथ में ज़रा सी गीली मिट्टी लग गयी थी और थोड़ी उसकी frock में भी। सो वो जार जार रो रही थी. खैर हमने उसके हाथ धोये और ये बताया कि कुछ नहीं हुआ बेटा, ये देखो, धुल गयी मिट्टी। खैर साहब थोड़ी देर में उसकी माँ आ गयी, high heels पहन के और उसने हमारी बड़ी क्लास लगाई कि आप लोग ठीक से काम नहीं करते हो, लापरवाही करते हो, कैसे गिर गया बच्चा, अगर कुछ हो जाता तो? सचमुच इतना बड़ा हादसा, भगवान् न करे किसी के साथ हो जीवन में।

एक और आँखों देखी घटना है मेरी। कैसे माँ बाप अपने बच्चों को spoil करते हैं. हम लोग एक स्कूल में एक और कैंप लगा रहे थे, बच्चे स्कूल बस से आते थे। ड्राईवर ने जोर से ब्रेक मारी तो एक बच्चा गिर गया और उसके माथे पे हलकी सी चोट लग गयी, यही कोई एक सेन्टीमीटर का हल्का सा कट. अब वो बच्चा जोर जोर से रोने लगा, बस यूँ समझ लीजे, चिंघाड़ चिंघाड़ के, क्योंकि उसने वो खून देख लिया अपने हाथ पे। खैर मामूली सी बात थी, हमने उसे फर्स्ट ऐड दे के बैठा दिया। तभी भैया, यही कोई 10 मिनट बीते होंगे, उस बच्चे के माँ बाप पहुँच गए स्कूल और फिर वहां जो रोआ राट मची। वो बच्चा जितनी जोर से रोता, उसकी माँ उस से ज्यादा जोर से चिंघाड़ती और उसका बाप जोर जोर से चिल्ला रहा था, पागलों की तरह। मेरे बच्चे को सर में चोट लगी है, आप लोग अभी तक हॉस्पिटल ले के नहीं गए? अरे ये तो न्यूरो का केस है सर में चोट लगी है।

मेरा एक दोस्त जो वहां PTI था उसके साथ हम एक स्थानीय neurology के हॉस्पिटल में गए। अब अस्पताल वालों को तो बकरा चाहिए काटने के लिए। वहां पर भी उस लड़के का बाप CT Scan, Plastic surgery न जाने क्या क्या बक रहा था। पर finally उस अस्पताल के doctors ने एक BANDAID लगा के भेज दिया।

एक और किस्सा उसी स्कूल का, एक श्रीमान जी सुबह सुबह आ के लड़ रहे थे, क्या हुआ भैया, स्कूल बस नहीं आयी, हमें आना पड़ा छोड़ने। बाद में पता चला श्रीमान जी का घर स्कूल से बमुश्किल 200 मीटर दूर, उसी कालोनी में तीन सड़क छोड़ के था और लड़का उनका 10 साल का था।

क्या बनाना चाहते हैं आज कल के माँ बाप अपने बच्चों को? ये spoon fed बच्चे जीवन के संघर्षों को कैसे या कितना झेल पाएंगे?

आज से लगभग 15 साल पहले, मेरा बड़ा बेटा 4-5 साल का था, अपने खेत पे जा रहे थे हम। बरसात का season था, धान के खेतों में पानी भरा था। मेरे बेटे ने मुझे कहा, पापा, मुझे गोदी उठा लो। मैंने कहा कुछ नहीं होता बेटा, पैदल चलो और वो चलने लगा और थोड़ी ही देर बाद पानी में गिर गया। कपडे सब कीचड में सन गए। अब वो रोने लगा, मैंने फिर कहा कुछ नहीं हुआ बेटा, उठो, वो वहीं बैठा बैठा रो रहा था। उसने मेरी तरफ हाथ बढाए, मैंने कहा अरे पहले उठो तो और वो उठ खड़ा हुआ। मैंने उसे सिर्फ अपनी ऊँगली थमाई और वो उसे पकड़ के ऊपर आ गया। हम फिर चल पड़े। थोड़ी देर बाद वो फिर गिर गया, पर अबकी बार उसकी प्रतिक्रिया बिल्कुल अलग थी। उसने सिर्फ इतना ही कहा, अर्रे... और हम सब हंस दिए। वो भी हंसने लगा और फिर अपने आप उठा और ऊपर आ गया। मुझे याद है उस साल हम दोनों बाप बेटा बीसों बार उस खेत पे गए होंगे, वो उसके बाद वहां से आते जाते कभी नहीं गिरा।

कल मैं नीरज जाट जी की करेरी झील की trekking वाली पोस्ट पढ़ रहा था। 4 दिन उस सुनसान बियाबान में, जिसका रास्ता तक नहीं पता, इतनी बारिश और ओला वृष्टि में, ऊपर से ले कर नीचे तक भीगे, भूखे प्यासे, न रहने का ठिकाना न सोने का। उस कीचड भरे मंदिर के कमरे में, उस बिना chain वाले स्लीपिंग बैग में रात बिता के भी, कितने खुश थे। इतना संघर्ष शील आदमी, क्या जीवन में कभी हार मानेगा?

काश कार्तिक राजाराम, जी हाँ यही नाम था उस लड़के का। उसे भी बचपन में गिरने की, गिर गिर के उठने की, बार बार हारने की और हार के बार बार जीतने की ट्रेनिंग मिली होती।

कठोपनिषद में एक मंत्र है, उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत। उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक आगे बढ़ते रहो। शुरू से ही अपने बच्चों को इतना कोमल, इतना सुकुमार मत बनाइये कि वो इस ज़ालिम दुनिया के झटके बर्दाश्त न कर सके। एक अंग्रेजी उपन्यास में एक किस्सा पढ़ा था। एक मेमना अपनी माँ से दूर निकल गया। आगे जा कर पहले तो भेंसों के झुण्ड से घिर गया। उनके पैरों तले कुचले जाने से बचा किसी तरह। अभी थोडा ही आगे बढ़ा था कि एक सियार उसकी तरफ झपटा। किसी तरह झाड़ियों में घुस के जान बचाई तो सामने से भेड़िये आते दिखे। बहुत देर वहीं झाड़ियों में दुबका रहा, किसी तरह माँ के पास वापस पहुंचा तो बोला, माँ, वहां तो बहुत खतरनाक जंगल है। Mom, there is a jungle out there. इस खतरनाक जंगल में जिंदा बचे रहने की ट्रेनिंग अभी से अपने बच्चों को दीजिये।

- साइबर नज़र

एदुआर्दो गालेआनो की कविता

दुनिया भर में डर

जो लोग काम पर लगे हैं वे भयभीत हैं
कि उनकी नौकरी छूट जायेगी
जो काम पर नहीं लगे वे भयभीत हैं
कि उनको कभी काम नहीं मिलेगा
जिन्हें चिंता नहीं है भूख की
वे भयभीत हैं खाने को लेकर
लोकतंत्र भयभीत है याद दिलाये जाने से और
भाषा भयभीत है बोले जाने को लेकर
आम नागरिक डरते हैं सेना से,
सेना डरती है हथियारों की कमी से
हथियार डरते हैं कि युद्धों की कमी है
यह भय का समय है
स्त्रियाँ डरती हैं हिंसक पुरुषों से और पुरुष
डरते हैं निर्भय स्त्रियों से
चोरों का डर, पुलिस का डर
डर बिना ताले के दरवाज़ों का,
घड़ियों के बिना समय का
बिना टेलीविज़न बच्चों का, डर
नींद की गोली के बिना रात का और दिन
जगने वाली गोली के बिना
भीड़ का भय, एकांत का भय
भय कि क्या था पहले और क्या हो सकता है
मरने का भय, जीने का भय।

नवजागरण के अग्रदूत मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली

हरियाणा के ऐतिहासिक शहर पानीपत के रहने वाले हाली उर्दू के शायर व प्रथम आलोचक के तौर पर प्रख्यात हैं। हाली का जन्म 11 नवंबर 1837 ईस्वी में हुआ ।उनके पिता का नाम इजद बख्श व माता का नाम इमता- उल- रसूल था ।जन्म के कुछ समय के बाद ही इनकी माता का देहांत हो गया । हाली जब नौ वर्ष के थे तो इनके पिता का देहांत हो गया। 1856 में हाली ने हिसार जिलाधीश के कार्यालय में नौकरी कर ली। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अन्य जगहों की तरह हिसार में भी अंग्रेजी शासन व्यवस्था समाप्त हो गई थी। इस कारण उन्हें घर आना पड़ा।

दिल्ली निवास (1854 -1856)के दौरान हाली के जीवन में जो महत्वपूर्ण घटना घटी वह थी उस समय के प्रसिद्ध शायर मिर्ज़ा ग़ालिब से मुलाकात व उनका साथ। हाली ने जब ग़ालिब को अपने शेर दिखाये तो उन्होंने हाली की प्रतिभा को पहचाना व प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यद्यपि मैं किसी को शायरी करने की अनुमति नहीं देता ,किंतु तुम्हारे बारे में मेरा विचार है कि यदि तुम शेर नहीं कहोगे तो अपने हृदय पर भारी अत्याचार करोगे। 1863 में हाली जहांगीराबाद चले गए ।इसके बाद हाली को रोजगार के सिलसिले में लाहौर जाना पड़ा ।वहां पंजाब गवर्नमेंट बुक डिपो पर किताबों की भाषा ठीक करने की नौकरी की। हाली के जीवन में असल परिवर्तन यहीं से हुआ ।

1874 में बरखा रुत शीर्षक पर मुशायरा हुआ, जिसमें हाली ने अपनी कविता पढ़ी। यह कविता हाली के लिए और उर्दू साहित्य में सही मायने में इंकलाब की शुरुआत थी ।अब हाली का नाम उर्दू में आदर से लिया जाने लगा था। 4 साल नौकरी करने के बाद एंग्लो-अरेबिक कॉलेज, दिल्ली में फारसी और अरबी भाषा के मुख्य अध्यापक के तौर पर कार्य किया। 1885 ईस्वी में हाली ने इस पद से त्यागपत्र दे दिया।।

हाली ने अपनी शायरी के जरिए ताउम्र अपने वतन के लोगों के दुख तकलीफों को व्यक्त करके उनकी सेवा की। वे शिक्षा व ज्ञान को तरक्की की कुंजी मानते थे। उन्होंने लोगों की तरक्की के लिए पानीपत में स्कूल तथा पुस्तकालय का निर्माण करवाया। पानीपत में जो स्कूल आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल के नाम से जाना जाता है ,पहले यह हाली मुस्लिम हाई स्कूल था, जो देश के विभाजन के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब को क्लेम में सौंप दिया गया था। शिक्षा के प्रति उनकी

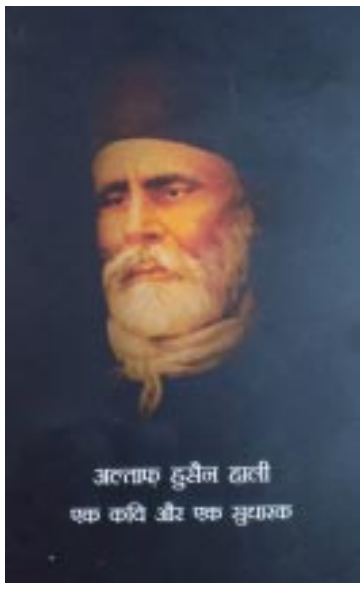

प्रतिबद्धता को देखते हुए 1907 में कराची में ऑल इंडिया मोहमड़न एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस में हाली को प्रधान चुना गया। हाली की विद्वता को देखते हुए 1904 में शमशुल -उलेमा की प्रतिष्ठित उपाधि दी गई ।यह हजारों में किसी एक को ही हासिल होती थी ।आखिर के वर्षों में हाली की आंख में पानी उतर आया। जिसकी वजह से उनके लेखन-पाठन कार्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। 31 दिसंबर 1914ईसवी को हाली इस दुनिया को अलविदा कह गए ।शाह कलन्दर की दरगाह में हाली को दफना दिया गया ।

हाली ने कविताओं के अलावा आलोचना की पुस्तक मुक़दमा-ए-शेरो शायरी, कवि सादी की जीवनी, हयाते सादी, सर सय्यद की जीवनी ,हयाते जावेद तथा ग़ालिब की जीवनी, यादगारे ग़ालिब की रचना की। कविताओं में मुनाजाते बेवा,बरखा रुत, हुब्बे वतन,तथा मुसद्दस-ए- हाली बहुत लोकप्रिय है।

हाली के दौर में समाज में बड़ी तेजी से बदलाव हो रहे थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय समाज पर कई बड़े गहरे असर डाले थे ।अंग्रेज शासकों ने अपनी नीतियों में भारी परिवर्तन किए थे। आम जनता भी समाज में परिवर्तन की जरूरत महसूस कर रही थी। समाज नए विचारों का स्वागत करने को बेचैन था। महात्मा ज्योतिबा फुले, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर, सर सैयद अहमद खान आदि समाज सुधारकों के आंदोलन भारतीय समाज में नई जागृति ला रहे थे। समाज में हो रहे परिवर्तन के साथ साहित्य में भी परिवर्तन की जरूरत महसूस की जा रही थी। इस बात को जिन साहित्यकारों ने पहचाना और साहित्य में परिवर्तन का आगाज किया, उनमें हाली का नाम अग्रणी पंक्ति में रखा जा सकता है।

अल्ताफ हुसैन को हाली इसलिए कहा जाता है कि वह अपनी रचनाओं में अपने वर्तमान को अभिव्यक्त करते थे। उन्होंने समाज की सच्चाइयों का पूरी विश्वसनीयता के साथ वर्णन किया। समसामयिक वर्णन में हाली की खासियत यह है कि वह अपने समय में घटित घटनाओं के पीछे काम कर रही विचारधाराओं को भी पहचान रहे थे। विभिन्न प्रश्नों के प्रति समाज में विभिन्न वर्गों के रुझानों को नजदीकी से देख रहे थे। इसलिए वे उनको ईमानदारी एवं विश्वसनीयता से व्यक्त करने में सक्षम हो सके। अपने लिए हाली तखल्लुस चुनना उनके समसामयिक होने व अपने समाज से गहराई से जुड़ने की इच्छा को दर्शाता है।

बरखा रुत

सन 1876 को लाहौर में पहला मौजूआती मुशायरा हुआ जिसका उनवान 'बरखा रुत' था। उस मुशायरे में मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली ने जो अपनी नज़्म पढ़ी उसने अदब में एक इंकलाब बरपा कर दिया और उस वक्त के अखबारों ने इस नजम की तारीफ में मुद्दतों अपने कालम काले किये। नजम का एक हिस्सा देखिए:

वह सारे बरस की जान बरसात,
वह कौन खुदा की शान बरसात,
आई है बहुत दुआओं के बाद,
और सैकड़ों इलतजाओ के बाद ,
वह आई तो आई जान में जान ,
सब थे कोई दिन के वरना मेहमान,
है शुक्र गुजार तेरे बरसात,
इंसा से लेकर ता जामादात,
गुलशन को दिया जमाल तूने,
खेतों को किया निहाल तूने,
ताऊस को नाचना बताया,
कोयल को अलापना बताया,
खम बागों में जा बजा गड़े हैं,
झूले हैं के सू बसू पड़े हैं,
इक सबको खाड़ी झूला रही है ,
एक गिरने से खौफ खा रही है,
गाती है कभी कोई हिंडोला,
कहती है कोई विदेशी ढोला,
नदी-नाले चढ़े हुए हैं,
तैराकों के दिल बढ़े हुए हैं,
बगलों की है डारे आके गिरती,
मुर्गाबियां तैरती है फिरती ।